रासलीला

प्रेम का मण्डल

‘भागवतपुराण’ की एक कथा पर आधारित

भाग छः :
भगवान के दर्शन

वह जादुई रात्रि अन्य गोपियों के अन्तर में भी रूपान्तरण ला रही थी। जब वे सब जगह कृष्ण के साकार स्वरूप को ढूँढ़ रही थीं तब वह कुछ ऐसा था मानो वे अपने आस-पास के संसार को एक नई दृष्टि से देखने लगी हों। किसी को जंगल के जीव-जन्तुओं के लिए बहुत प्रेम महसूस हो रहा था, किसी को फूलों और पौधों की अनूठी सुन्दरता को लेकर, तो किसी को पेड़ों की मज़बूती और उनके तने की चौड़ाई को लेकर कौतूहल हो रहा था। कुछ गोपियाँ नदी के तट पर गईं और उसकी तेज़ लहरों की गहराई में झाँकने लगीं, तो कुछ रात के अनन्त आकाश के विस्तार को आश्चर्य से निहारने लगीं मानो आकाश में किसीने चमचमाते तारे बिखेर दिए हों। अब उन्हें वन और उसके जीवों के मन्द स्वर सुनाई दे रहे थे जो कह रहे थे,

> “हम सभी भगवान का ही रूप हैं। हमसे प्रेम करो और तुम्हें वे मिल जाएँगे।”

और धीरे-धीरे हर एक की समझ गहरी होने लगी। अगर हर वृक्ष, फूल और जीव-जन्तु भगवान का रूप है तो गोपियाँ जहाँ कहीं भी देखें उन्हें भगवान के दर्शन हो सकते हैं। और तभी उनमें आनन्द और विस्मय के भाव उमड़ने लगे। एक बार फिर उन्हें अपनी अच्छाई और सुन्दरता का अनुभव हुआ, ठीक वैसा ही जैसा उन्हें कृष्ण की संगति में हुआ था। अब उन्हें एक-दूसरे में भी अच्छाई और सुन्दरता दिखने लगी। यह अनुभव अमृतमय था। हर माँग और हर लालसा लुप्त हो गई थी।

जगमगाता चन्द्रमा अब भी बड़ी उदारता से अपनी चाँदनी बिखेर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो ग्रह-नक्षत्रों ने खुद ही अपनी आगे बढ़ने की गति धीमी कर दी हो जिससे वे इस अलौकिक लीला को और देर तक चलने दे सकें। दो-दो, तीन-तीन के समूहों में गोपियाँ एक-दूसरे का हाथ पकड़े वापस उस मैदान में लौटीं। वहाँ आकर वे ज़मीन पर बैठ गईं और श्रीकृष्ण का नाम गाने लगीं। प्रेम से झंकृत होते

उनके स्वर रात के वातावरण में गूँज उठे। वे और भी सुमधुर स्वर में गाने लगीं, अपने आपको उस क्षण में पूर्ण रूप से निमग्न करने लगीं। गाते हुए उनके अन्तर में शुद्ध भक्ति उदित होने लगी, विशुद्ध प्रेम जाग्रत हुआ—भगवान के लिए प्रेम, स्वयं के लिए प्रेम, एक-दूसरे के लिए प्रेम। और फिर, नामसंकीर्तन के स्वरों में पिरोई हुई, मन्त्रमुग्ध कर देने वाली श्रीकृष्ण की बाँसुरी की ध्वनि उन्हें एक बार फिर सुनाई दी। हर एक ने अपनी आँखें खोलीं।

श्रीकृष्ण वन में उनके पास वापस आ गए थे, उनके गले में तुलसी और चमेली का हार था। प्रसन्न होकर वे गोपियों की ओर देखकर मुस्कराए।

“मैं वही प्रेम हूँ जो तुम अपने हृदय में महसूस कर रही हो,” उन्होंने गोपियों को बताया। “मेरा स्मरण करो और मैं तुम्हारे साथ हूँ।”

उन्होंने ये शब्द अपने श्रीमुख से बोले थे या उन सभी के हृदय में बोले थे, वे इसमें भेद नहीं कर पा रही थीं—और न ही इससे कोई अन्तर पड़ रहा था क्योंकि अब वे जानती थीं कि दोनों एक ही हैं।

और अब श्रीकृष्ण ने उन्हें एक बार फिर उठकर नृत्य करने का संकेत किया।

गोपियाँ एक-साथ उठीं। उन्होंने श्रीकृष्ण के आस-पास बड़े-बड़े घेरे बना लिए। इस बार कोई दिखावा नहीं था और पीछे छिपना भी नहीं था। वे सब एक-साथ घूम रही थीं, उड़ान भरते पक्षियों के झुण्ड की तरह शोभायमान और अतीव सुन्दर।

श्रीकृष्ण की ‘रासलीला’ के इस अन्तिम चरण को देखकर देवी-देवताओं और गन्धर्वों ने भी सन्तोषभरी साँस ली। क्योंकि अब उन्हें प्रेम का एक मण्डल दिख रहा था जिसके मध्य में श्रीकृष्ण एक नीलमणि की तरह शोभायमान हो रहे थे और उनके चारों ओर चक्कर लगातीं, रंगबिरंगे भँवर के समान गोपियाँ झूम रही थीं।

गोपियाँ भोर तक नृत्य करती रहीं, हर एक भगवान के प्रेम में खो चुकी थी। फिर थकी और तृप्त हो, वे अपने-अपने घर लौट गईं। वहाँ, सब ठीक था। बच्चे सुरक्षित और प्रसन्न थे, ऐसा लग रहा था कि उनके परिवारों को यह पता भी नहीं था कि वे कहीं चली गई थीं।

इसके कुछ ही समय बाद ग्वालबालों के साथ श्रीकृष्ण का वह समय समाप्त हो गया। उन्हें मथुरा बुलाया गया ताकि वे राजकुमार का अपना जीवन आरम्भ करें और राज्य के न्यायोचित राजा को राजसिंहासन पर पुनः प्रतिष्ठापित करें। परन्तु वे कभी भी वृन्दावन के उन सादगीभरे लोगों को नहीं भूले

जिनके बीच रहकर वे बड़े हुए थे। वे लोग भी श्रीकृष्ण को कभी नहीं भूले, और न ही उस मन्त्रमुग्ध कर देने वाली 'रासलीला' को, जब श्रीकृष्ण ने उन्हें दिखाया था कि कृष्ण वह प्रेम हैं जो उन लोगों को अपने अन्दर महसूस होता है—उनके अपने लिए, एक-दूसरे के लिए और आस-पास की हर वस्तु के लिए।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।